International Journal of Enhanced Research in Educational Development, IJERED,
ISSN: 2320-8708, Vol. 13 Issue 2, Mar.-Apr, 2025

शासकीय एवं गैर शासकीय माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के विद्यालयीन वातावरण का तुलनात्मक अध्ययन

दिव्या सिंह[1], डॉ. ब्रजेश कुमार शर्मा[2]

[1]शोधार्थी, शिक्षा विभाग, रबींद्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय, रायसेन।
[2]प्राध्यापक एवं अध्यक्ष, शिक्षा विभाग, रबींद्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय, रायसेन।

सारांश

किसी भी बालक को यदि परिष्कृत रूप देना है तो यह माना जाता है कि परिवार के साथ–साथ विद्यालय का वातावरण भी अत्यंत महत्वपूर्ण है विद्यालय का वातावरण जिसमें भौतिक वातावरण (कक्षा में बैठने की व्यवस्था, प्रकाश तथा हवा की व्यवस्था, खेल का मैदान, पुस्तकालय, शुद्ध पेयजल की व्यवस्था, शौचालय की उचित व्यवस्था एवं अभौतिक जैसे मानवीय व्यवहार (अध्यापकों की नैतिकता, विश्वास का स्तर, अभिभावकों का सहयोग, समुदाय का सहयोग अध्यापक की प्रभाविकता, कार्य निष्ठा, संतुष्टि, अध्यापक एवं विभिन्न कर्मचारीगण की वेतन सुविधा, अनुशासन) सभी का होना अनिवार्य है क्योंकि इससे विद्यार्थी प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित होते हैं। उद्देश्य के रूप में 1. शासकीय एवं गैर शासकीय माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के विद्यालयीन वातावरण का अध्ययन करना। परिकल्पना के रूप में शासकीय एवं गैर शासकीय माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के विद्यालयीन वातावरण के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं है। न्यादर्श चयन के निमित्त आकस्मिक चयन विधि द्वारा शासकीय एवं गैर शासकीय माध्यमिक विद्यालयों का चयन किया साथ ही यादृच्छिकी विधि के अंतर्गत टिपट प्रणाली के द्वारा विद्यार्थियों का चयन किया गया। विद्यालय वातावरण के मापन हेतु पांडे, शालिनी एवं अग्रवाल, श्वेता (2017) द्वारा निर्मित उपकरण का प्रयोग किया गया। निष्कर्षस्वरूप पाया गया कि अशासकीय विद्यालयों का विद्यालय वातावरण, शासकीय विद्यालय वातावरण की तुलना में उच्च पाया गया।

प्रस्तावना

प्राथमिक शिक्षा एवं उच्च शिक्षा के मध्य कड़ी को जोड़ने का कार्य माध्यमिक शिक्षा करती है जिसमें कि कक्षा 6 से लेकर कक्षा 10 तक के विद्यार्थियों को लिया जाता है। यह कक्षाओं की सीमा विभिन्न बोर्ड के अनुसार भिन्न भिन्न होती है, जैसे कुछ राज्य स्तरीय बोर्ड कक्षा 6 से लेकर कक्षा 8 तक को माध्यमिक शिक्षा के रूप में मानते हैं वहीं कुछ बोर्ड कक्षा 6 से 10 को माध्यमिक स्तर के रूप में मानते हैं। शोधार्थी द्वारा कक्षा 8 के विद्यार्थियों को चयनित किया गया है जिसे मध्य प्रदेश बोर्ड, भोपाल द्वारा माध्यमिक शिक्षा के रूप में वर्गीकृत है। आधुनिक युग में जब तकनीकी, वैश्वीकरण एवं आधुनिकीकरण का बोलबाला है वहां कक्षा 8 में पढ़ने वाला विद्यार्थी भी अपनी शैक्षिक रुचियों के प्रति सजग हो रहा है, साथ ही साथ किशोरावस्था की प्रारंभिक अवस्था होने के कारण उसमें कई शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक परिवर्तन दिखना प्रारंभ हो जाता है जिसके कारण अधिकांश किशोर में व्यावहारिक दोष जैसे चिड़चिड़ापन, क्रोध, संवेगात्मक अस्थिरता, कुंठा की भावना अर्थात समायोजन संबंधी समस्याएं उत्पन्न होने लगती हैं। संभवतः इसी कारण इस समय विद्यार्थियों के व्यवहारिक परिमार्जन हेतु माता–पिता, शिक्षक की भूमिका अग्रणी होती है। माता–पिता विद्यार्थियों को घर में लालन–पालन, पोषण में उचित संरक्षण देने की आवश्यकता है साथ ही उन्हें किशोर को बाहरी वातावरण में किस प्रकार प्रतिक्रिया देनी है उक्त तथ्य को भी घर में ही किशोर को बताया जाना चाहिए। किशोर घर के बाद विद्यालय में अधिकांश समय व्यतीत करता है जिससे विद्यार्थियों पर विद्यालय वातावरण का भी प्रभाव अवश्यंभावी है। विद्यालय वातावरण के अंतर्गत शिक्षक, प्रधानाचार्य, विद्यालय का भौतिक वातावरण, शिक्षक द्वारा प्रदत्त ज्ञान, पाठ्य सहगामी क्रियाओं का क्रियान्वयन, प्रशासनिक

कर्मचारी जैसे प्रधानाचार्य, माता पिता, चपरासी, पुस्तकालयाध्यक्ष आदि का आपस में एवं विभिन्न सदस्यों के प्रति व्यवहार के अंतर्गत आते हैं। इसके परिसंदर्भ में शोधार्थी के सम्मुख जिज्ञासा के फलस्वरुप यह प्रश्न उपस्थित हुआ कि शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण में कोई अंतर है या नहीं।

अतः शोधार्थी ने **''शासकीय एवं गैर शासकीय माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण का तुलनात्मक अध्ययन''** शीर्षक पर शोध अध्ययन करने का निश्चय किया।

समस्या कथन

''शासकीय एवं गैर शासकीय माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण का तुलनात्मक अध्ययन''।

संबंधित साहित्य का अध्ययन

बैश्लर एवं उनके साथियों.(2000) ने स्पष्ट किया कि शैक्षिक वातावरण अर्थात बाहरी वातावरण का विद्यार्थियों की उपलब्धि एवं विद्यालय संगठन पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है साथ ही लाइब्रेरी, फर्नीचर, प्रयोगशाला संबंधी सुविधाएं एवं उपकरण का भी विद्यालय वातावरण पर प्रभाव पड़ता है यदि विद्यालय वातावरण में सभी तत्व सही प्रकार से भूमिका अदा करें तो विद्यालय की परिस्थितियों से वातावरण को उच्च बनाया जा सकता है।

मेलोन एवं टेंटर.(2003) ने स्पष्ट किया कि विद्यालय मैदान एवं भवन अर्थात भौतिक वातावरण, शिक्षक एवं विद्यार्थियों का स्वास्थ्य भी विद्यालय वातावरण को प्रभावित करते हैं। अनेक शोध द्वारा यह है स्पष्ट हो चुका है कि विद्यालय वातावरण सकारात्मक एवं नकारात्मक रूप से विद्यार्थियों की उपलब्धि को प्रभावित करते हैं।

कोर्ट कैंप एवं अन्य.(2003) ने स्पष्ट किया कि विद्यार्थियों की सफलता उनके अधिगम योग्यताएं और विद्यालय वातावरण के विभिन्न कारकों से सर्वाधिक प्रभावित होती हैं। विभिन्न शोध के द्वारा यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ है कि संस्था का शिक्षा के प्रति अभिव्यक्ति, विद्यार्थियों की अधिगम क्षमता, विद्यार्थियों की मनः स्थिति, विद्यार्थियों की पारिवारिक वित्तीय स्थिति या विद्यालय वातावरण की परिस्थितियां विद्यार्थियों के निष्पादन को सकारात्मक या नकारात्मक रूप से प्रभावित अवश्य करती हैं।

बेरी.(2005) ने स्पष्ट किया कि किसी भी संस्था का प्रकार एवं शिक्षा के प्रति उसका कार्य व्यवहार विद्यार्थियों एवं अभिभावकों की मानसिकता से अत्यंत प्रभावित होता है जिससे यह बात सिद्ध की जा सकती है कि उक्त तथ्य विद्यार्थियों को धनात्मक रूप से प्रभावित करते हैं या नहीं।

जे.हैट्टी.(2009) ने उपलब्धि सम्बन्धी 800 मेटा एनालाइसिस करके ज्ञात किया है कि विद्यार्थी की शैक्षिक उपलब्धि विभिन्न कारकों यथा पारिवारिक कारकों, विद्यालयी कारकों, कक्षागत कारकों व कक्षागत प्रक्रिया से प्रभावित होती है तथा ये सभी कारक परस्पर एक-दूसरे से अन्तर्सम्बन्धित रूप में भी प्रभावित होती है।

मिक,जैस.(2013) ने यह प्रकाशित किया है कि विद्यालय वातावरण में विद्यार्थियों की स्वास्थ्य, सुरक्षा साथ ही उनके शैक्षिक उपलब्धि को उन्नत करने हेतु विभिन्न शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य सेवाएं एवं सहायता प्रदान करना चाहिए।

अब्दु.,बी.(2015) ने स्पष्ट किया कि विद्यालय में भौतिक संसाधनों की अधिकता तथा ज्यादातर पुस्तकालय एवं कम्प्यूटर प्रयोगशालाओं से आधुनिक बनाये गये थे, इसलिए उन विद्यालयों का वातावरण अच्छा था।

अध्ययन के उद्देश्य

1. शासकीय एवं गैर शासकीय माध्यमिक विद्यालयों की विद्यार्थियों के विद्यालयीन वातावरण का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पना

1. शासकीय एवं गैर शासकीय माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के विद्यालयीन वातावरण के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं है।
2. शासकीय माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र छात्राओं के विद्यालयीन वातावरण के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं है।
3. गैर शासकीय माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र छात्राओं के विद्यालयीन वातावरण के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं है।

न्यादर्श चयन विधि

इस शोध के संदर्भ में शोधार्थी ने आकस्मिक चयन विधि द्वारा शासकीय एवं गैर शासकीय माध्यमिक विद्यालयों का चयन किया साथ ही यादृच्छिकी विधि के अंतर्गत टिपट प्रणाली के द्वारा विद्यार्थियों का चयन किया गया।

न्यादर्श

प्रस्तुत शोध के निमित्त शोधार्थी ने ग्वालियर शहर के शासकीय एवं गैर शासकीय माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत कक्षा 8 के शिक्षकों का चयन किया गया।

शोध में प्रयुक्त उपकरण

इस शोध के संदर्भ में विद्यालय वातावरण के मापन हेतु पांडे, शालिनी एवं अग्रवाल, श्वेता (2017) द्वारा निर्मित विद्यालय वातावरण मापनी का प्रयोग किया गया।

सांख्यिकी प्रविधि

इस शोध के निमित्त शोधार्थी द्वारा मिनी टेब सॉफ्टवेयर के द्वारा विभिन्न विवरणात्मक सांख्यिकी मान (मध्यमान, मानक विचलन, प्रथम चतुर्थांश, तृतीय चतुर्थांश, मध्यांक, विषमता एवं कुकुदता) तथा निर्वाचनात्मक सांख्यिकी मान के अन्तर्गत टी–मान का प्रयोग किया गया।

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या

4.1 शासकीय एवं गैर शासकीय माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के विद्यालयीन वातावरण के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं है।

विद्यालयीन वातावरण के परिप्रेक्ष्य में चयनित सम्पूर्ण प्रतिदर्श के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र–छात्राओं के प्राप्तांक को प्राप्त कर तुलनात्मक अध्ययन हेतु निर्वाचनात्मक सांख्यिकी गणना (टी-मान) ज्ञात की गई, जिनका समग्र प्रस्तुतीकरण अधोलिखित तालिका संख्या
4.1 में प्रस्तुत किया।

तालिका संख्या 4.1

शासकीय एवं गैर शासकीय माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के विद्यालयीन वातावरण संबंधी प्राप्तांकों का मध्यमान, प्रमाणिक विचलन मान, टी-मान एवं सार्थकता स्तर।

प्रकार	विद्यार्थियों की संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन मान	टी-मान	सार्थकता स्तर
शासकीय	400	199.41	36.32	13.27	0.01 सार्थक है।
गैर शासकीय	400	238.38	45.00		

तालिका संख्या 4.1 का अवलोकन करने पर विदित हो रहा है कि शासकीय माध्यमिक विद्यालयों कि विद्यार्थियों की विद्यालयीन वातावरण प्राप्तांकों का मध्यमान 199.41 तथा प्रमाणिक विचलन मान 36.32 है। गैर शासकीय माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों का विद्यालयीन वातावरण प्राप्तांकों का मध्यमान 238.38 एवं प्रमाणिक विचलन मान 45.00 है अर्थात गैर शासकीय माध्यमिक विद्यालयों का विद्यालयीन वातावरण प्राप्तांकों का मध्यमान उच्च पाया गया। साथ ही दोनों समूह का तुलनात्मक अध्ययन करने पर प्राप्त टी-मान 13.27 है जो कि 0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है। अतः प्रस्तुत शोध के निमित्त शून्य परिकल्पना **"शासकीय एवं गैर शासकीय माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के विद्यालयीन वातावरण में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है"**को

अस्वीकृत किया जाता है। गैर शासकीय विद्यालयों की विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि की तुलना में शासकीय विद्यालय की विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि निम्न होने का कारण यह हो सकता है कि शासकीय विद्यालयों में स्थाई शिक्षकों की अपेक्षा गुरु जी, शिक्षामित्र या अतिथि शिक्षक के द्वारा अध्यापन कार्य किया जाता है। प्रायः अतिथि शिक्षक, गुरुजी या अन्य शिक्षकों द्वारा शिक्षण कार्य किया जाता है जिनकी अध्यापन नियुक्ति प्रक्रिया सरल होती है जिसके कारण उनकी योग्यता पर प्रश्न चिन्ह लगा होता है एवं पारिश्रमिक भी स्थाई शिक्षकों की तुलना में कम होता है इसलिए वह शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को गंभीर रूप से संपादित नहीं करते हैं। **पांडे, शालिनी..(2017)** ने भी अपने शोधोंपरान्त पाया कि शासकीय एवं अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के विद्यालयीन वातावरण में सार्थक अंतर होता है। **रोहितेश.(2018)** ने अपने शोध अध्ययन में पाया कि शासकीय एवं अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों के विद्यालय वातावरण में कोई सार्थक अंतर नहीं है। **खान, रसूल राबिया एवं भट्ट, सैयद मोहम्मद (2019), बोरा, जोरिष्मिता.(2021)** ने भी निष्कर्ष स्वरूप पाया कि निजी माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों का सरकारी विद्यालयों की विद्यार्थियों की अपेक्षा शैक्षिक उपलब्धि उच्च पाई गई। **यादव, सूबेदार (2022) ने** शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों की विद्यार्थियों पर विद्यालय वातावरण के प्रभाव का अध्ययन शीर्षक पर अध्ययन किया निष्कर्षस्वरूप पाया कि शासकीय एवं अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों की विद्यार्थियों की विद्यालय वातावरण भिन्नता पाई गई अर्थात अशासकीय विद्यालयों का विद्यालय वातावरण शासकीय विद्यालय की तुलना में उच्च पाया गया।

4.2 शासकीय माध्यमिक विद्यालयों के छात्र छात्राओं के विद्यालयीन वातावरण के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं है।

विद्यालयीन वातावरण हेतु चयनित प्रतिदर्श में शासकीय माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र छात्राओं का तुलनात्मक अध्ययन हेतु प्रथक–प्रथक सांख्यिकी गणनायें (मध्यमान, प्रमाणिक विचलन एवं टी–मान) ज्ञात की गई जिनका प्रस्तुतीकरण तुलनात्मक रूप से अधोलिखित तालिका संख्या 4.2 में प्रस्तुत किया गया है –

तालिका संख्या 4.2

शासकीय माध्यमिक विद्यालय के छात्र छात्राओं के विद्यालयीन वातावरण संबंधी प्राप्तांकों का मध्यमान, प्रमाणिक विचलन मान, टी-मान एवं सार्थकता स्तर।

यौन भेद	संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन मान	टी-मान	सार्थकता स्तर
छात्र	200	198.41	35.56	2.51	0.05 सार्थक है।
छात्रा	200	201.96	33.27		

तालिका संख्या 4.3 के अवलोकन से विदित हो रहा है कि शासकीय माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के विद्यालयीन वातावरण संबंधी प्राप्तांकों का मध्यमान 198.41 एवं प्रमाणिक विचलन 35.56 एवं छात्राओं के विद्यालयीन वातावरण संबंधी प्राप्ताकों का मध्यमान 201.96 एवं प्रमाणिक विचलन मान 33.27 है। मध्यमानों का अवलोकन करने पर स्पष्ट हो रहा है कि छात्रों का विद्यालय वातावरण संबंधी प्राप्तांकों का मध्यमान, छात्राओं के मध्यमान की तुलना में उच्च है। छात्र छात्राओं के मध्य विद्यालय वातावरण संबंधी प्राप्तांकों का टी-मान 2.51 है जो कि 95 प्रतिशत सार्थकता स्तर पर सार्थक पाया गया है। अतः प्रस्तुत शोध के निमित्त शून्य परिकल्पना **''शासकीय माध्यमिक विद्यालयों के छात्र छात्राओं के विद्यालयीन वातावरण में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है''**को अस्वीकृत किया जाता है।

4.3 गैर शासकीय माध्यमिक विद्यालयों के छात्र छात्राओं के विद्यालयीन वातावरण के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं है।

प्रस्तुत उद्देश्य के सन्दर्भ में गैर शासकीय माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र छात्राओं के विद्यालयीन वातावरण से सम्बन्धित प्राप्तांको का मध्यमान, प्रमाणिक विचलन की गणना करके उनके अंतर की सार्थकता की जांच के लिये टी-मान का ज्ञात किया गया इन सांख्यिकी मानों की निम्न तालिका 4.3 में प्रदर्शित किया गया है।

तालिका क्रमांक 4.3

गैर शासकीय माध्यमिक विद्यालय के छात्र छात्राओं के विद्यालयीन वातावरण संबंधी प्राप्तांकों का मध्यमान, प्रमाणिक विचलन मान, टी-मान एवं सार्थकता स्तर।

यौन भेद	संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन मान	टी-मान	सार्थकता स्तर
छात्र	200	230.06	44.84	3.83	0.01 सार्थक है।
छात्राओं	200	246.69	43.72		

तालिका क्रमांक 4.3 में प्रदर्शित परिणाम स्पष्टतः व्यक्त कर रहे हैं कि गैर शासकीय माध्यमिक विद्यालय के छात्र छात्राओं का मध्यमान (230.06 एवं 246.69) है एवं प्रमाणिक विचलन मान (44.84 एवं 43.72) है। दोनों समूहों के मध्य प्राप्त टी-मान 3.83 है जो कि 99 सार्थकता स्तर पर सार्थक है। मध्यमानों का अवलोकन करने पर स्पष्ट हो रहा है कि छात्राओं का विद्यालयीन वातावरण संबंधी प्राप्तांकों का मध्यमान, छात्रों के मध्यमान की तुलना में उच्च है। अतः प्रस्तुत शोध के निमित्त शून्य परिकल्पना **''गैर शासकीय माध्यमिक विद्यालयों के छात्र-छात्राओं के विद्यालयीन वातावरण में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है'।** को अस्वीकृत किया जाता है।

निष्कर्ष

गैर शासकीय विद्यालयों का विद्यालय वातावरण, शासकीय विद्यालय वातावरण की तुलना में उच्च पाया गया। उक्त तथ्य की पुष्टि शोधार्थी को प्रदत्तों का संकलन करते समय भी देखने को मिली, जिसमें अधिकांशतः अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों का विद्यालयी भौतिक वातावरण शासकीय विद्यालय की तुलना में उच्च है। शासकीय विद्यालयों की अध्यापकों की नियुक्ति अत्यंत कठिन प्रक्रिया से होती है एवं सरकार द्वारा भी विभिन्न योजनाएं जैसे हरित विकास योजना जिसमें पर्यावरण को संरक्षण प्रदान करते करने हेतु विद्यार्थियों को प्रोत्साहित एवं अनुभव प्रदान करने हेतु विभिन्न क्रियाकलाप एवं पाठ्यचर्या में क्रियाएं शिक्षकों द्वारा संपन्न किए जाते हैं शिक्षण सहायक सामग्री, प्रयोगशाला, मध्यान भोजन व्यवस्था, निः शुल्क कॉपी किताब, सर्दियों में स्वेटर सभी की उपयुक्त व्यवस्था होने पर भी विद्यालय वातावरण, गैर शासकीय विद्यालयों की तुलना में उच्च न होने का कारण यह भी हो सकता है कि जो विद्यार्थी पढने आते हैं उनके पारिवारिक वातावरण, उनके माता–पिता की आय, शिक्षा स्तर, अध्ययन के

प्रति जागरूकता आदि किस प्रकार की है तथा सबसे महत्वपूर्ण तत्व शिक्षकों की नौकरी स्थायित्व होने के कारण उन्हें भी लगता है कि विद्यालय वातावरण, विद्यार्थियों की उपलब्धि कैसी भी हो हमारी नौकरी पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा जिसके कारण वह भी थोड़े निश्चिंत हो जाते हैं। जबकि गैर शासकीय विद्यालयों में अध्यापनरत शिक्षकों को हर समय इस बात की चिंता सताती रहती है कि विद्यार्थियों की उपलब्धि निम्न ना हो जाए, नहीं तो इन्हें विद्यालय से निष्कासित कर दिया जाएगा एवं अध्ययन करने वाले बालकों के माता–पिता का शिक्षा, आय, आकांक्षा का स्तर शासकीय विद्यालयों की तुलना में उच्च होता है इन सब का प्रभाव विद्यालय वातावरण पर पड़ता है। **सेटल.(2005)** ने सिद्ध किया कि शासकीय विद्यालयों की तुलना में गैर शासकीय विद्यालय का वातावरण अधिक अच्छा है। **गोबिंर.(2005)** ने प्रकाशित किया कि कड़ी मेहनत एवं अनुभव के आधार पर गैर शासकीय विद्यालयों की निष्पादन अच्छी है, उन्होंने बताया कि शिक्षक के ऊपर कम व्यय करने पर भी गैर शासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की उपलब्धि उच्च पाई गई। **बिसॉन्ग.(2011)** ने पाया कि शासकीय विद्यालयों की तुलना में गैर शासकीय विद्यालयों में संकलनात्मक मूल्यांकन, प्रेरित वातावरण कक्षीय वातावरण में विद्यार्थियों का अनुशासन एवं पाठ्य सहगामी क्रियाओं का निरीक्षण उचित प्रकार से संपन्न किए जाते हैं।

दर्भ ग्रन्थ सूची

[1] Acosta,E.S(2001).The Relationship Among School Climate Academic Self-Concept and Academic Achievement.*Dissertaion Abstracts International*,62(5):1717-A.

[2] Akomolafe. (2012) A comparative study of principals administrative effectiveness in public and private secondary School in Ekiti state Nigeria. *Journal of Education and Practice*, 3(13), 39-45.

[3] बी, राममोहन. बाबू, (1996). विद्यालयों के प्रकार और अध्यापको के लिंग के संबंध में विद्यालयों का संगठनात्मक वातावरण का अध्ययन, *पर्सपेक्चर इन एज्युकेशन,* 12 (3),159–163.

[4] बोहरा, लक्ष्मीधर (2001). प्राथमिक विद्यालय के बच्चों में विचार करने की योग्यता (विचारशक्ति) को बढ़ानाः पर्यावरणीय अध्ययन एक मार्ग के रूप में. *प्राथमिक शिक्षक* वोल्यूम VI (3) 25–32.

[5] Hekli, Somerslo.(2002). School Environment & Children's mental well-being from online http://thesis.helsinki.fi/isbn 952-91-4678-7.

[6] डी, कॉक. (2004). माध्यमिक शिक्षा में नवीन अधिगम और अधिगम वातावरणों का अध्ययन, *रिव्यु ऑफ एज्युकेशन रिसर्च*,4(1),118-125.

[7] Kumar, Mamil & Mishra, Kushendra.(2015). Performance management: A comparative study of Government and private schools. *International Journal of Multi Disciplinary Research and Development*,2(12),412-414.

[8] Kohan.(2009). A study of effect of school environment on the attitude towards education among the senior secondary school students from tabassum, Research Review. *International journal of multi disciplinary*, 4(8),52-56.

[9] पांडे, शालिनी. (2019) शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के विद्यालय वातावरण का तुलनात्मक अध्ययन, *शोध मंथन,* 5(2),24–33.

[10] Rohtesh.(2018). School Environment of Government and Private Secondary Schools. *Innovative Research Thoughts*, 4(4),259-263.

[11] Rashmita, k and Jasmine, K. S(2018) A comparative study on public and private funded schools in Chennai. *International journal of pure and applied mathematics*, 120(5),245-254.

[12] Shah,S.J (2013). A comparative study of Government and private secondary school teachers towards they are teaching profession. *Journal of education and practice*, 4(1),118-125.

[13] Singh,T.S.(2014). A comparative study on the academic achievement between the students of private and Government high school which in Imphal East district (Manipur). *Voice of research*, 3(1),12-16.

[14] Saha,k.(2005).The Influence of school Environment on Cognitive Development of Children.journal of All India Association for Educational Research,17(1-2),58-59.
[15] Borah, Jurishmita (2021). Comparative study of Government schools and private schools.*llkoretim online - Elementary Education*,21(6),2544-2550.
[16] Yadav,Subedar(2022). Effect of school Environment of Government and Private School Students, Journal of Emerging Technologies And Innovative Research (JETIR),9(7),h213-216.
[17] Wang, M. T., and Degol, J. L. (2016). School climate: A review of the construct, measurement, and impact on student outcomes. Educ. Psychol. Rev. 28, 315–352. doi: 10.1007/s10648-015-9319-1